

१३० नमो लोकांताय ॥
 पादमसुलथाय पू
 लङ्गाहयज्ञाय च वीहि
 अस्मिन् वीहि नमसुल
 गुलमसुलपंचगव्यसि
 हा लोकांताय नमः ॥

[illegible]

लक्षणे ते तयके विधिभेदं पुना
वैशेवनाय वज्रपुष्पं प्रतिष्ठाता. भ. ए. अमृ. अमो

या ६१

पूजा विमर्जनशिक्षाधिवासनी लांजन वरुणा वासक रुं का य. यं च गव
विय. म. ल. थ. च. क. ॥ ॥ अ. ख. लु. ना. ह. ह. ॥ अ. भ. दि. नि. व. जि. रु. व. व. रु.

वन्द्यं वन्द्यं ॥

दृष्टीयश्च वनदसंलिः

मं वा मं हि क क म लु नू क म लं द ह्यु रु मं पृ कं व द ह्यु य मं ह्यु नः
 छि न सा लो का नू कं या म य ॥ २ ॥ रा व ना ॥ अं व रा व ह्यु द्या स र्व ध मा धा ॥

॥ अं ख सु वा हूं ॥ अं भ दि नि व क्षि रु व व ऊ

॥थनध्यान॥ ॥शुद्धकृष्णदुग्धानस

ना सर्वरूविद धनमारुयं श्रीजापारु

नंदलुमंयुक्तं वंदयन्ममह्वनः

॥ रावना ॥ अं स्वरावधुद्या सर्वधमा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

धनसहकाशकीकाय

॥ न्याहा ॥ दक्रि एरुस

अकार्षणचन्द्रमधुन

॥ ख ॥ अं व ऊ ष झ ञ

समयद्वारा भाष्यगत

॥ मायया हला की हव न मात्मानं शव यं

आ० का० प्र० स० स० स० स० ॥ स० ॥ वा० स० द० स०

॥ अं वूं आं किं खं हूं ॥ ३ ॥ अं लो सां पां नां वूं

नाहकपालकं। सर्वकथाशकवजाजलि

॥ अंक या यंक ॥ धीने ॥ अंक या यंक ॥

कथं ॥ ओं हूं ऊं य वि ऊं या य हूं ॥ नू रू उ ॥ ओं स्वा व न दा य हूं ॥ क हूं ॥ ओं ऊं रु य
 प्र दा य हूं स्वा हा ॥ पा द द या ॥ ॥ ॥ ओं मे जी य हूं ॥ धी ल ॥ ओं की ति रा हूं हूं
 ॥ च हूं ॥ ओं व ऊं या हा हूं ॥ क हूं ॥ ओं ख ग हूं हूं ॥ का स ॥ ओं ला क हूं
 न हूं ॥ मे ॥ ओं मे ऊं या हूं ॥ म न ॥ ओं स व धी व न ध वि सु की हूं ॥ पा द द
 या ॥ ओं स म न रु दा य हूं ॥ सर्वा ल य ॥ ॥ ओं हूं ऊं जि ना य हूं ॥ ऊं उ वा हूं ॥
 ओं हूं ऊं प ना जि ना य हूं ॥ वा म वा हूं ॥ ओं हूं मा न हो न्य प्र म र्द ण य हूं ॥ मू ख ॥
 ओं हूं ऊं काल म ल प्र स म ण हूं ॥ हृ दि ॥ ओं हूं ध न दा य हूं ॥ ऊं उ पू लि ॥ ओं हूं व स न्ध वा य हूं ॥ ख ड

प्र सि ॥ ओं ऊं क हूं ॥ व डा हूं ॥

लंघन हास्यं चिरे

धन वृद्ध म धु ला धि ष्ठा ना ॥ ओं सर्व का था रा ना हं ॥ सर्व का था रा ना ल य ॥ हं
 न ध म्मी य न ना ला द हं ॥ म धु ल म र्म मं ॥ ॥ आव सा ॥ ओं वृद्ध म
 धु ल दे व ना य ऊं य पु नि ॥ क स्वा हा ॥ ॥ स्वा न उ य कं क य ॥ ओं वृद्ध
 म धु ल सर्व वि द्या न त्म ॥ न य हूं ॥ ॥ स्वा न वा य ॥ ओं ऊं ॥ वे ना व ना
 य व ऊं य पु नि क स्वा हा ॥ द थ ॥ ओं ऊं ॥ ऊं क्रा या य ॥ ओं ऊं ॥ न त्म स कृ वा
 य ॥ ओं ऊं ॥ ऊं मि ना रा य ॥ प ॥ ओं ऊं ॥ ऊं मा य सि धि य ॥ ॥ उ ॥ ओं ऊं ॥ य ना व

नाय ॥ अ ॥ अं आर्य सामकिय ॥ ने ॥ अं आर्य पाहुलाय ॥ वा ॥ अं आ
 र्य का नाये ॥ ॐ ॥ विधि
 किल्ली लसं प्रख्यापं
 नागप्रचक्षुः नभाह
 नृक्षिप्रक्षामकवलनय ॥ समिकं वा वृद्धाय कश्चि नमः ॥ ॥ वलिवि ॥
 अं नभा वृद्धाय महाकनक्षारय ॥ रुनि कुरु दया यप न मात्य समकाग

कचिरुयकिधु कसूरुया सत्त्वार्थमहादूखकनमाय ॥ ॐ देवल्लिदिः
 वागन्धनभायकसूरु
 वाक्षोपकिष्ठापनाय अं
 गमथा ॥ ॐ ॥ अयिं सारुगवा
 सगरालोकविदनरुनपू नृषदं स ॥ नाथि ॥ अस्मादवा नां च स नृषा नां च
 वृद्धारुगवाने वृद्धनलाय ॐ दंपत्यमधुलं निर्या कया मि ॥ ० ॥
 रुनेमालं वलं ऊन निजिं कुरु वपं कलं निर्वर्तय दमा नृदं वृद्धं प्रसमाप्य है ॥

थनधर्ममलुलाधिष्ठान॥ धनधर्मो ग्रंथं हानवथा विद्वधकं॥ सम
 नरुदं काया गुणधम ॥ धुलमरुमं॥ ॥ आचम॥ धर्ममलुल
 दवनाय अर्थप्रतिष्ठुस्वा ॥ हा॥ ॥ स्नानउयकं नय॥ धर्ममलुल
 सर्वविद्वान्त्मानयदं॥ ॥ स्नानवाय॥ धर्ममलुल
 पृथं प्रतिष्ठुस्वा हा॥ म॥ धर्ममलुल ॥ १ ॥ धर्ममलुल
 काय॥ २ ॥ धर्ममलुल ॥ ३ ॥ धर्ममलुल

॥ ४ ॥ धर्ममलुल ॥ अ ॥ धर्ममलुल ॥
 न ॥ धर्ममलुल ॥
 ॥ विधिपूर्वकनपुत्रा॥
 चकृपयं पानिष्ठां यण
 कि॥ म॥ धर्ममलुल ॥
 कायमरुधर्मो यरुमेनम॥ ॥ वलि॥ धर्ममलुल

मम सर्ववर्षस्यो नाथ २ रनिर्विकल्पं नमामुखं प्रह्लापात्मिकमिमांसीनालसनीनाकात्रं प्रह्लादवीनसमुक्तं

महापीता महानीला नत्तपंकजं पृथ्वदुक्तं ॐ दंवल्लिगृह्ण २ यक्षमृगाः
 दिगुंजोष्ठं धुं पिच २ यक्ष ॥ वदनी सन २ मधो वदनी धिपि २ व
 द्विवदनी स्वाहा ॥ २ ॥ गथा ॥ धर्मसु धा नगर्गं पु वदिर्गसा नाः
 उपायिकं पात्रनिर्वाणि कं ॥ कसो धर्म नत्ताय ॐ दं पृथ्व मधुलनि
 र्या कयाभि ॥ ० ॥ थनसंघमधुलाधिष्ठान ॥ सर्वलेक धर्मयुक्तं सर्वलोक
 धवर्जिकं ॥ समकरुदवाचारं ध्याय मधुलं सान्निधि ॥ ॥ आचमनं ॥ अंसंघ

मधुलदवकाय अर्घ्यप्रतिकृत्वाहा ॥ ॥ स्नान उद्योगं कय ॥ अंसंघमधुल
 सर्वविद्या नत्ता नथ ॥ स्नानवाय ॥ अंसं आर्या वलाकि कृष्ण नाय वरु
 पृथ्वं प्रतिकृत्वाहा ॥ मधु ॥ अंसं आर्य मेकीय ० ॥ १ ॥ अंसं आर्य गगधगं
 जाय ० ॥ २ ॥ अंसं आर्य स मकरुदाय ० ॥ ३ ॥ अंसं आर्य वरुयाधीय ०
 ॥ ४ ॥ अंसं आर्य मरुयायाय ० ॥ ५ ॥ अंसं आर्य सर्वनी वनधविस्करिय ० ॥ न
 ॥ अंसं आर्य क्रिकि गहाय ० ॥ वा ॥ अंसं आर्य खगहाय ० ॥ ६ ॥ विधि धर्म पूजा ॥

मुक्ति॥ चत्वारिंशत्प्रक्रियं न गच्छेत्सर्वस्य सोखादविद्वेषिणः चत्वारिंशत्प्रक्रियः
 लक्ष्मिणा संमलनात् ॥ कामहायागिनः ०० लक्ष्मीं वनयंगला
 रुगवता यस्मिन् गच्छेत् ॥ वालुकाप्रहाडी लक्ष्मीं साधितुं कथं वयं
 संधायकस्ते नमः ॥ ॥ वलिनां नमो लोकांताय देवाय नमः
 नयकनामसाहि वदिकया दययाय अहो नानकसत्त्वो ह्यनघाचि
 मात्यनाय महाकायः ०० दं वलियं चासुतादि संहि कं गृह्णते सर्व

१ लोकांताय नमः सर्वस्य सोखादविद्वेषिणः कामहायागिनः ०० लक्ष्मीं वनयंगला

सत्त्वानां च नयकादिः दू० खला नक्षत्रयः ३३ नक्षत्रसमूहः २२ वक्षस्य नक्षत्रसमूहः
 खनः सद्यः सद्यः सद्यः वा दिस्य नः ३३ नक्षत्रसमूहः २२ वक्षस्य नक्षत्रसमूहः
 ॥ सन्निर्गच्छेत् ॥ कायः हि ॥ रुलप्रक्रियं न गच्छेत् ॥ कायः नमः सन्निर्गच्छेत् ॥
 द्रागमिनिः रुलप्रक्रियं न गच्छेत् ॥ ३३ नक्षत्रसमूहः २२ वक्षस्य नक्षत्रसमूहः
 मिनी ३३ सन्निर्गच्छेत् ॥ अहो नयः प्राहो नयः ससाक नयः अहो नयः अहो नयः
 दक्षिणीयाः लोकस्य कस्मै संधयं लायः ०० दीप्यमानं निश्चयं कथामि ॥ ॥

वृत्त का अने या के दो २१

यत्र त्वा य ०० दीप्य म लु ल नि र्था क या मि ॥

वृत्त का क य क ॥ ३० ॥

न २ रु ल २ रु ग व न २ ध न २
ध न नि य रु ख स खान
व ला कि क ठ व ना य वा

स म य म न स न न २ रु २ रु द ख हा ॥

वा य क ॥ ३० ॥ न मा न ल य या य न मा आ या

धिस त्वा य म हा स त्वा य मा हा का नू धि का

य ॥ क य था ॥ ३० ॥ मा सिल म हा धि न २ रु द स त्वा रु न २ रु म न २ य द वि रु

धि का रु रु ध न स म का व ला कि क ठ व ना य ३० ॥ २१ ॥

३ क न २ द रु

पं लां घं रु ॥ व लि वि य ॥

॥ ३० ॥ मा य पा हा ३० ॥ सर्व दू ख स म य डा प्र रुं रु क

ध र्म ला वि स म रु का नां

ध म कि य सिं क न स सि न का क न रुं रु द ख हा

॥ ॥ अ र्घ या क क वा कं ॥

३० ॥ न २ सि नि २ क न २ य व २ रु न २ हा २ ही २

रुं २ ३० का न व रु ध व ध ध

न २ धि नि २ धू न २ रु न २ म न २ व न २ न धी

हा रु रु स प्र कि म धि रु धी न क ल २ रु य २ रु ग व सा मा दि त्वा य म व रु ध रु

व न व रु ध रु अ पि द व गं रु वि रु व न ध क म ला य अ र्घ प्र कि रु व न दा य स्वा

वा ग्व नि ध न रु

३ नि नि २ रु न २

[illegible]

लं धर्म स्के क्ष न न क्ष न क्ष य नि ॥ धर्म श्र य ड ग धिं म् ध न सा ना ग द्ध व मा या
 मा द्ध मा ल मा ड वि द्ध क म् प्र ह्वा या न मि मा स्के क्ष न न क्ष न क्ष ॥
 सा द्ध च व ना मा च व द्ध नि मा ल्प य ० म दि व स म्पा दा य या व दा वा धिः
 म धु नि ख धु ना म् अ व थ व र्क वा धि स त्व स द्ध १ क्ष न क्ष ग द्ध मि ग क्ष न
 म य ॥ ॥ ग व न ष मि य नि स ना म न थ थ द क्ष ना द्ध थ नि या दि न स थ गु लि ध
 म ना य या क् ख ना मा वा धि स त्व म धु ल स ख धु म द्ध ल थ ना मा अ व व र्क स द्ध

याकस न हानन ऊपनि ॥ थसंघ इयूडा गथिंद म्म धाल सासमसु सत्वप्राप्तिम
किं क्कुसंविश्रक थथिम
॥ ० ॥ समनो रुव नु
गवभा वाधिसत्वा व्व आ
त्काय वाक्क ना रि ४ सर्व वूद्ध वाधिसत्वा ना कापि क भो क न्ना संग म् ०० रु रु न नि
रु वान न य म या पाय क कर्म कर्म का चि रं वारु व न् ॥ न क सर्व भ क ध्वा यि धु यि

त्वाहुल्यित्वा सर्ववृद्धवाधिसत्त्वा नामाचार्यस्यानिकं अग्राव नया प्रव नया
 यकिद धनया ज्ञाननस्तन क्षयगिस्तदयामि॥ ॥ अयनिस्रुचकमः
 नया संमिदिगसंमदाव विष्ठाकपूदः प० उ० अ० न० वा० ००० अ० उ० थ
 मिगुलिदिगनविष्ठाकृ गवक्तृथागनदकागनस्तं रुनेवाधिसत्वः
 दकास्तं गुव उपाध्म थथिपनिस्रुवनं क्रियनिस्रुथव २ नामन ग्वनखक्रिय
 निस्तं विकृधंखसया दाः दय० धनिलनवचनन नृग्व उ नया दायापदयूवदू

न्वंसमस्तु कथा गगनवाधिसत्त्वपिंकखसंयादादयन्तु न्वंसाभवव्याकखः
 संयादापापदयन्तु न्वंसा नयादाखसंदयन्तु संगयादाखसंदयन्तु
 दनंथगुलिकुनसया दाहनेहथुनसया दाजिमिसंथथीपा
 ययादाखसंदयन्तु अ कर्मयादापापभवनंयाककापापथधिं२
 गुपायसकलं कुगुलिदाव गवमदाव डरिगधनकाडा समस्त कथागन
 वाधिसत्त्वया हुडान गुन्यानिकुनस हुडान थधिं गुह्यया हुवनप्रवव

१४

यादंविष्ठाकदक्षनायादंविष्ठाकथासुथधिं२कुलपात्रसहुवनंजिमिसं
 थधिं२पापथमयादास याडाकुलपात्रपनिष्कुधुमनपावसमस्त
 कावगशनाहनाथह ॥ समन्वाहवंगुरुदक४यथागज्याहीहकाः
 यावज्जिवप्राप्तमिपात्र पुनिविरगा निहस्तदधुनिहस्तक्षुलः
 जिहादयावकासर्वसत्त्वप्राप्तिरुक्तवृज्जकककयपिपीलिकामपादाया ॥
 ॥ रुष्टिषापनिष्कुमिसंनयकमनयास्यंगुननआहावियाखदहनगथ

धावसा क्रापाश्या वृद्धयुष्यनिश्चयः स्वनामाधायसाः जिवन्मवहययाडाविश्या
 त्वलं प्रालिप्त्या यगुसवसः मशुडा ॥ गथधावसादायां वंसस्या कः क्षुम्भु
 क्षुः स्वप्नः रुद्राणि या नाः वंसस्या कः लक्ष्म वक्तः कः नृणा चाडा दया चाव
 समस्तु पाविस्त्रुः कुरु नः जायवयूः स पाविः ०० त्यादिः रुचं धूलनजायव
 यमिमिल आदिः धर्मी २ सत्वप्राधियनिष्कः धर्म न प्रमिया न या दाडा विशा कः
 ॥ ॥ जवं मवादं ०० मावि लामूपादाय यावश्च नाप्रिगामिनी यावश्च सूर्याः

१५

दया कन प्रालिप्त्या कः प्रहाय पाक्षमिया कात्यकि विप्रमामि निहस्त दक्षु नि
 हस्त क्षु ४ लजिना दया वना सर्वसत्त्व प्रालिप्त्य कः वृक्ष कः कनय
 यिपीलि कामूपादाय च वं मवादं प्रथम नाः क्षि कया माया मरुता भिष्या
 मनः क्षि धी अ न विधिः अ नूकनामि ॥ ॥ हगु नृहनाथः रुद्रया ल
 स्यः आह्लाविया धीः किमि स्य नः धगु धर्म नाय या कः स्वनामाधायनिया नाप्रि सव
 नः स्वनामाः सूर्य उदय मशु नः धनामाः प्राणि मस्या नाः प्रावि स्या यगु नस मशु

मनना नूय गजि वरु रान आदिं का यय व वरु कं मन ना थं म मान ॥ व्याखन दूय
 मरु ल वा य था य त्वा कसा नं कू य न स्वा क य व र ग न न ले य न या य ना ना व
 र्धु गि सा वरु ध गि य ध्रु दा ल स्वा गा य रं कि ना जा व ला सा ७ व आदिं चा
 न रु नं व न स म र्वे कं अ व न स न य थ थिं २ वरु क सं कू य नि न स म र्श या
 ॥ ॥ अ न ना र्दं य थ म ना र्क ध क या मा या धा म रु ना धि का म न धि कं अ नः
 वि धि अ न क ना मि ॥ मि ॥ थ क य का न न कि मि स्य नं चा ना ध नी द नं स म रुः

१८

कथा ग र्क सि य प नि रु ग थ क्रि थं स न क्रि थं ग थ वि धि या क आ डा कि मि स्य नं कू
 ल पा न या आ ग्ना थ थ र गु लि ध र्म ना य या क ध न न य र्श ना ह ना थ ॥ ॥
 अ न ना र्दं धी ल स म्ब न स मा दा न न अ ना ग र्क ध नि रु थ ग ना रु व यं २ र्द
 क स म्ब र्क वृ द्ध वि डा च न धा स प न्न र्ग ना लो क वि द न रु न य नू ष द म्ब
 धा न धि धा रु द वा ना र्क वृ द्धा रु ग वा नू २ दं च पा ष र्धं धी ल स म्ब न स मा दा नं
 चि रु लं का ना य चि रु प वि रु ना य या ग र्क ना य र्श र्वा त्वा नां म का य वृ द्ध र्वा

प्राफयस्तु ॥ मि ॥ हनुनरुनाथ कृत्वा नया कृत्वा नृपका नर्तु किमिसेन
 उरुमधर्मलाहानविष विषरुकिन गथिंस्तु कथा गन वद्धरुगवान
 इयवपूजायाय जात्यः रुकरुविषावरुमानसवस्तु अंगुलि आयुगु
 लिं चादगुलिं वरुमानस वस्तु विद्यानं संशु कुरु वस्तु लाकविंदसुअः
 काकाल्यमदाप्राप्तियारा नाकचिद्विद्या कुरु देवयां मनूकयां दनथासस
 नथासुथथिंस्तु कथा गन रुगवक्तु ॥ हचंपाषधसीलं धगुलिधर्मनाय कुरुः

१९

र्थन चिरुया जालंका नया कुरु चिरुयनिल नया कुरु समस्तु याग नाय याकसम
 रुप्राप्तियकाय याकशि मिसेन वद्धपद लाय या कुरु धगुनि धर्मनं कुरु
 धानयाया दयष्टादनध ननयशु नाह ॥ जावक्तु जिव धर्मन
 हाकुरु अरुनाय मर्क ॥ प्रानरुन्या वद्धपनिरा गति कायस्तु कर्म कुरु
 नाजाधर्म कुरु धर्मा वस्तु हयवरुनां मया नवा कुरु नय नलं पनरा या मनसा
 पिन कुरु गुरु वस्तु नयस्तु ॥ जावक्तु रागा जिवनवरुनय का नधर्मवरु

आपथमिडा नाहाकिनधननयविष्णुक कमलुल यमप्रिदधुयसकथः
 किखज नाहाकिनधनन यविष्णुक समस्तलो कया कंकनूषावकश
 याडाविष्णुक थथिभय नमध्वनया कसदा नंनन हयामरुना ॥ २९
 मुरुसम्वन २५०मि का रिंकलुदि दन २२वा ४ थषूक कानिपूना
 हानगननल कर्हि मरु या हानमयवा हानया वजा चार्थधीललिने दयमः
 खनयूय पोके सरुपनिवा नया कथ अरुमि वरुधर्म दनगुस कूलि दयकाशु ॥

रथलिस्थिपिदकधर्म दमक ॥ मकपूजा विसर्जन मिथ्या धिवा सं यं नगव्य वि
 या ॥ मलुलथा चक ॥ ॥ अं वज्र वध सुखरु ॥ सा नधर्मा य सं हन न
 या विध्वधक ॥ समक रुद्र वा चा गुं ॥ एष मलुल मरुमं ॥ ॥ मलुल
 ससाइइ न हायक ॥ ॥ अं श्री यंक नी धनक नी धनक नी आग हान क
 मा हा वी स्वा हा यं च ग न्न न हाय ॥ ॥ अं महा लक्ष्मी रुक नि वा स नी श्री व सुधा वारुः
 का न का य अर्ध पणि क स्वा हा ॥ ॥ मुनि ॥ अवि रु या द र्य स सिद्धि सदा अ न क

तलसुसमधि का वनं। आसायर्हमसिगृह्णमधुलनमसुः श्रीवसुधावधी
 सदा॥ ॥ मधुलसु नउयकं गजसकय॥ ॥ श्रीवसुधा नमधुलं चयार्क
 विमलस्वाहा॥ ॐ सर्व विद्या नूत्ना वयं॥ ॥ यनस्वानवायकं॥
 अं वसुधा न वसुध्विपा नय वसुधा न स्वाहा॥ ॐ कूं वसुधा न स्वाहा॥ ॐ
 महालक्ष्मी रुक्मी वासि न वसुधा न स्वाहा॥ मध्या॥ अं वज्र वसागवनिद्या चोय
 तथा गगाय वज्र पूर्ण पुनिकु स्वाहा॥ पूर्व॥ अं आर्या वलाकि नक्षत्राय वज्र पूर्ण॥

स्वअसमं अं आर्य वज्र पानी यवज॥ ॐ असमं अं ला देवी यवज॥ ॐ अनं॥
 अं जमलकुलं दाय स्वाहा॥ स्वक कू॥ अं श्री रुक्मी स्वपोलनाय नाराय स्वाहा॥
 ऊ अं कूं॥ अं श्री गुफा ये स्वाहा॥ स्वथ कूं॥ अं श्री सुगुफा ये स्वाहा॥ ऊ कूं का ३
 ॥ श्री सनसु ये स्वाहा॥ ॥ ऊ थ कूं॥ अं श्री चन्द्रकाना ये स्वाहा॥ ऊ कूं॥ अं
 मासिरुद्रा ये स्वाहा॥ ॐ पूर्ण रुद्रा ये स्वाहा॥ स्व॥ अं धनं दाय स्वाहा॥ थ॥
 अं वेशवस्य ये स्वाहा॥ ऊ॥ अं विविकुलुली ये स्वाहा॥ स्व॥ अं कलिमाली ये स्वाहा॥

ओं मूखं दायं स्वाहा ॥ जय ॥ ओं चन्द्राय स्वाहा ॥ जय ॥ ओं श्री महा लक्ष्मी रुक्मि
 वासनीय स्वाहा ॥ दधू ॥ ॐ श्री वसुधै स्वाहा ॥ स्वां ॥ ओं श्री वसुधै नी स्वाहा ॥
 ॥ वन ॥ ओं श्री वसुधै ॥ स्वाहा ॥ श्री कृष्ण ॥ ओं श्री वसुधै न नी स्वाहा ॥ धी ॥
 ओं श्री वसुधै ना धननी ॥ य स्वाहा ॥ मन्त्र ॥ क म न ॥ ॥ मुक्ति ॥ कल्यादि
 कन विधिना प्रविष्ट्य माना या धन यामि विविध न त् स व र्ण मया प र्ण
 क ना कि रु व न स रु धे व सर्व गं ला क रु न नि प्र ल मा मि रु र्ण ॥ थ न म लु त

किं विवका प्रो

दधू सः क सी ह्य क ॥ ओं रु ग व नी व स धा ना धा त्वा पु षि ना त न रु व ना नि द
 क र्ष य ॥ ओं श्री य श्री क वि ध न क नी धां न्य क नी आ ग ह्य ग रु वीं स्वा हा ॥ व
 का न य के ॥ ओं आ र्थः ॥ श्री व स धा ना धा धां ग रु क व र्ण स्वा हा ॥ ॥
 थ न का य श्री कृ ण इ इ ॥ श्री ल सि द्वा र्ण म र्ण श्री र्ण म लु ल स रु स वा ना
 स रु ल न स हा य के वा क ॥ ॥ ओं उ र्क रु र्क व र्ण सि प्र व र्ण नि सि षा द नि
 श्री व स धा ना द वी य श्री र्ण नि रु स्वा हा ॥ श्री ख ना ल पू जा ॥ ओं श्री व धा न नी य

स्वाहा॥ अं य स धा न धी य स्वाहा॥ थ नः स्वां श्रु ल सिः लं ख न हा सं विय ग म गु ल स की
 न क॥ अं व स्र धा वा स दान त्वाः या वि ड न व ना न निः सा ध ना या यि का व क सो धः
 ल क्री सि धि व ल प्र दा ॥ ॥ थ न म गु ल सः नि य क्क हा क्रि कि २ स्वां वा य क ॥
 अं न भा न ल प्र या य ग न ॥ मं जी व मं ल क ती रु ल ह र्द दि व नू यः श्री व स्र धा
 व व स्रः सि र्व क रि षा नि क नीः म म का र्थ सि धि क नि स्वा हा ॥ २१ ॥ प चा य हा न
 य जा ॥ मु कि ॥ ॥ अं न भा मु र म हा द वोः स्र व सि धि प्र दा य नीः न भा मु र म हाः

ल क्रीः व स्र धा वा न भा मु र ॥ थ न स्वा हां का आ हा न क ॥ ॥ क द थ भा अं शो म्य नः
 य स्वा हा ॥ अं दि व नू य स्वा हा ॥ अं श्री ह न नू य स्वा हा ॥ अं श्री प हा या न मि क स्वा हा ॥
 अं श्री व क स्र ल ह द या य ॥ स्वा हा ॥ अं श्री स रू ड स्वा हा ॥ अं श्री स रू ड म नी स्वा हा ॥
 उं श्री मं ग ल स्वा हा ॥ उं श्री ॥ स्र मं ग ल स्वा हा ॥ उं श्री श्रु ल स्वा हा ॥ उं श्री च ल २ स्वा
 हा ॥ उं श्री च प ल स्वा हा ॥ अं श्री उ द्वा क नि स्वा हा ॥ उं श्री उ रु द नि स्वा हा ॥ उं श्री स रू व नीः
 स्वा हा ॥ उं श्री ध न व नि स्वा हा ॥ उं श्री धा न व नि स्वा हा ॥ उं श्री २ म नि स्वा हा ॥ उं श्री प रा
 म नि स्वा हा ॥ उं श्री मं ग ल स्वा हा ॥ उं श्री वि म ल स्वा हा ॥ उं श्री नू रू म स्वा हा ॥ उं श्री नि र्मः

लं स्वाहा॥ उं श्री मलनामनि स्वाहा॥ उं श्री सुनयमल स्वाहा॥ उं श्री अननक स्वा
हा॥ उं श्री विननक स्वाहा॥ उं श्री धिननक स्वाहा॥ उं श्री विषयकमि स्वाहा॥ उं
श्री विद्युद्ध श्री लं स्वाहा॥ उं श्री विषयजषी स्वाहा॥ उं श्री विद्युद्धनय स्वाहा॥
उं श्री आवमनि स्वाहा॥ उं श्री आकर्षनि स्वाहा॥ उं श्री श्री कूल स्वाहा॥ उं श्री
मंकूल स्वाहा॥ उं श्री परंकूल स्वाहा॥ उं श्री श्री माद्यांकु ४४ ४४ ४४ ४४ ४४ ४४ ४४ ४४
धियवरुनि स्वाहा॥ उं श्री प्रवमनि स्वाहा॥ उं श्री विमिम स्वाहा॥ उं श्री नूनमः

स्वाहा॥ उं श्री धि धिम स्वाहा॥ उं श्री धूधूम स्वाहा॥ उं श्री नन २म स्वाहा॥ उं श्री खख
स्वाहा॥ उं श्री खखूम स्वाहा॥ उं श्री नन २म स्वाहा॥ उं श्री ना नकु मां रुगवमी वसुधा या
नामधा जनि मलायका व नक्षत्रगुपिक नि स्वाहा॥ उं श्री वज्र स्वाहा॥ उं श्री म
हावजायम स्वाहा॥ उं श्री आवरुनी स्वाहा॥ उं श्री यवरुनी स्वाहा॥ उं श्री
टर्क २ स्वाहा॥ उं श्री ० क २ स्वाहा॥ उं श्री टर्क २ स्वाहा॥ उं श्री रुर्क २ स्वाहा॥ उं श्री वू
र्क २ स्वाहा॥ उं श्री वर्षणी स्वाहा॥ उं श्री यवर्षमि स्वाहा॥ उं श्री निष्पादनि स्वाहा॥ उं

श्रीवज्रधनसागरनिर्घोषायः कथा गगायः सख्यमनस्मनस्वाहा ॥ ॐ श्री सर्वकथा
 गगनसख्यमनस्मनस्वाहा ॥ ॐ श्री सर्ववृद्धसख्यमनस्मनस्वाहा ॥ ॐ श्री धर्मसख्यमः
 नस्मनस्वाहा ॥ ॐ श्री सद्यः सख्यमनस्मनस्वाहा ॥ ॐ श्री गुर्विणीसख्यनयसु
 गानिमहाकजा श्री स्वाहा ॥ ॐ श्री महाभाकमकिस्वाहा ॥ ॐ श्री महायोद्धिम
 किस्वाहा ॥ ॐ श्री सर्वकवचा कनिस्वाहा ॥ ॐ श्री सर्वद्रष्टनिहकनिस्वाहा ॥ ॐ श्री स
 र्वभद्रविनाशनिहकस्वाहा ॥ ॐ श्री आगच्छसमयमनस्मनस्वाहा ॥ ॥ यवि

पूजय ॥ ॥ यनंकाः खानवायगुनहावा ॥ ॐ श्री वसुधासखाहा ॥ ॐ श्री वसुः
 धानाधानसिखस्वाहा ॥ ॥ यनंकाः खानवायगुनहावा ॥ ॐ श्री वसुधासखाहा ॥ ॐ श्री वसुः
 नृनकायवायवायनपूजा याचक ॥ ॥ यनंकाः खानवायगुनहावा ॥ ॐ श्री वसुधासखाहा ॥ ॐ श्री वसुः
 हानमूर्तिनमाभिगगाः मकिमनाहं माचनंकिर्य ग्यानिः ॥ ॐ श्री वसुधासखाहा ॥ ॐ श्री वसुः
 निधानं कावर्ननलवर्कवदूजनस्मद्विसागर्नवलवर्षा ॥ ॥ यनंकाः खानवायगुनहावा ॥ ॐ श्री वसुधासखाहा ॥ ॐ श्री वसुः
 वियक ॥ ॐ श्री वसुधासखाहा ॥ ॐ श्री वसुः ॥ ॐ श्री वसुधासखाहा ॥ ॐ श्री वसुः ॥ ॐ श्री वसुधासखाहा ॥ ॐ श्री वसुः

वच्च धर्मनस्य कवाः श्रुता नानुमर्कः ॥ ॥ हृमिष्यपनि जावन् गव गोभाधनः
 साः किवनं वद नयना नं रुक्ता श्वगु विधर्म धने नय सा ल मरुक्ता श्रुता ननु
 किं श्वगु लिधर्म धन नयः दत्ता ॥ ॥ नकागमानन धन नका वरुः शीव
 सूया नायाः पूर्ण कर्माणि वं ॥ ॥ हनं गथ धन सा हृमिष्यः काये धन य
 भविष्यः वाक धन य वचन विरु धन य नृगण थूलिं डमि गधन कांठा भवना मरुत्त
 र्पः नाग द्यः काम कांठा सा या मोरुः माल ना अः श्व शी २ वसू धना दवी या शुवरु

धर्म धन नया याः पूज्य न श्रुत क धन सैय हि संपूर्णा रुय अ धर्कः ॥ ॥ पानिव
 द्यय नि त्याग कि कायः सर्म कन ४ ना ना धर्म धर्क धर्माः वत्त रु वरु रु वरु ॥ ॥
 हृमिष्यः हृष्य रु का प्रा नि रुन कि वा ज रु प नि वि य सा यं म भ अ थ अ नं
 ग कि स द्ध धन ल ल ना अ ना ना धर्म या गु धा रु द न रु न धर्म स व म रु य
 श्वगु लि व रु धर्म धन ल या न श्रु व र्ण धन सैय हि द व श्रु दि वा यि अ धर्कः शी २
 रु ग वा न श्रु हृ द य क ल धर्क धन न ना ना धर्म धा रु स न स रु या नं दा वि द ना

८

सन रुय मसा वध क रुनं ना ना लो गन क य व्याधि नं पिं उ न य थ न म रु ना
 ध र्क गु न ल मिष य नि ल क रु रु लो ॥ ॥ थ न का ग व ग रु न क सि र्वा
 धि वा स न या य थ लि व न का ना या पू जा या न का ना ना ना म रु सं व रु का
 व रु स थ ना डा क ले म ले ख न नि या ना रु सि रु सं सा या व मि षा यि य क
 अ रु र्ध वा स ना ल रु

अ. ४४. ना. ४०. ३०
३१५

ASIA ARCHIVES

लोक ध्व ना य म लि य या य
 प र्मा क सा य सा क म नी य
 मे शी य न म वि का र ना मि त न
 वि चि त्त न क म श्रि य ध र्म रु नि शी
 य म धा ति वि कि रि ता य न

लोक ध्व न म उ ल वा य गु थ ॥ ५६ प ल

न म ४ प थ क व रु ना य त थ ग न
 सू व रु प रा दि त ना ना ना
 सि ह वि कि रि त ना ना
 स प मि रि त ना ना
 स म न न न रु ग थ क रु ना ना
 वि य षि र्वा दि रु रु स्यो गु वा य रु
 स प नि कि रि त ना म ध्व य वि रु
 स म ना व रु म थ य न
 ००३ क रु रु रु थ शी य न
 न ल य स प नि वि रु ना ना ना ना

प रि रु त रु रु रु ना ना य न ॥
 स्त्री १५ वा य गु थ प म १५६ प ल



आम्रकान्त

३४५